[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3251

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

वैदिक काल में पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति चेतना पर एक अध्ययन

संध्या जैन
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एजुकेशन इंस्टीट्यूट, इंदौर

सारांश
प्रस्तुत शोध का उद्देश्य वैदिक काल में पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति चेतना का अध्ययन करना है। इस हेतु वेद और उपनिषद् आदि के मंत्रों और सूक्तियों का अध्ययन पर्यावरण चेतना के संबंध में किया गया है। वेदों में पर्यावरण संरक्षण, प्रदूषण और निराकरण, और पर्यावरण के प्रति चेतना का वर्णन मिलता है जो इस बात को सत्यापित करता है कि वैदिक काल में भी पर्यावरण के प्रति चेतना थी जिसे आज के संदर्भ में धारण करने में सृष्टि और मानव का कल्याण निहित है।

प्रस्तावना
हिन्दू धर्म के सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद और उपनिषद् है इनमें जगह जगह प्रकृति से विरासत में मिली सभी वस्तुओं का जीवन से गहरा जुड़ाव मिलता है और इन सभी को अत्यंत पवित्र मानकर लोग इनकी पूजा अर्चना करते है। वेद वैदिक युग की शिक्षा के पाठ्यक्रम की पाठ्यपुस्तकें रही है शिक्षार्थी वेद मंत्रों तथा सूक्तियों को कंठस्थ करते और जीवन का अंग बनाते। वैदिक काल में पर्यावरण शिक्षा, प्रदूषण के कारणों और निवारण के विषय में चिंतन किया जाता रहा है। वैदिक युग के सिद्ध ग्रंथों ने पर्यावरण शिक्षा को सर्वोपरि माना। उनकी सीख आज और अधिक प्रांसगिक व हितसाधक है।

उद्देश्य
- वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण संबंधी मंत्रों और सूक्तियों को अध्ययन करना।
- वैदिक काल में पर्यावरण प्रदूषण और उनका निवारण संबंधी शिक्षा का अध्ययन करना।
- वैदिक काल में पर्यावरण साधनों के संबर्धन हेतु प्रेरणा का अध्ययन करना।

औचित्य
वैदिक काल में शिक्षा में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना के अध्ययन के आधार आधुनिक युग में पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना को विद्यार्थियों में लाया जा सकें। पूर्व शोधों से ज्ञात होता है कि वैदिक काल के ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण और चेतना शिक्षा का अनिवार्य अंग रहा है अतः इस शोध में पर्यावरण संरक्षण एवं चेतना का अध्ययन किया गया है।

समस्या
वैदिक काल में पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति चेतना पर एक अध्ययन।
वैदिक काल – वेदों पर आधारित शिक्षा की अवधि को वैदिक काल कहा गया है।
पर्यावरण संरक्षण – प्रकृति ने जीव–जन्तुओं, वनस्पति, नदी, पहाड़, वायु, जल, खनिज, संपदा आदि की रचना की है। इन प्रकृति के संसाधनों को सुरक्षित रखते हुए उपयोग में लाना तथा प्रदूषण से रक्षित रखना ही पर्यावरण संरक्षण है।

पर्यावरण चेतना – पर्यावरण के प्रति संचेत होना, पर्यावरण संरक्षण से संबंधित कार्यक्रमों में सक्रिय रहना पर्यावरण चेतना है।

परिकल्पनाएं

- वैदिक काल में पर्यावरण संरक्षण संबंधी मंत्र व सूक्तियाँ पर्यावरण संरक्षण संबंधी चेतना निरूपित करने में आधार स्तंभ है।
- वैदिक काल में पर्यावरण साधनों के संवर्धन हेतु प्रेरणा आज भी सार्थक है।
- वैदिक काल के पर्यावरण प्रदूषण और उनका निवारण संबंधी शिक्षा आज भी सार्थक है।

शोध कार्य परिसीमन

विषय से संबंधित विभिन्न पुस्तकों का अध्ययन किया गया।

न्यादर्श

विषय से संबंधित उन मंत्रों और सूक्तियों चयन किया जो पर्यावरण संरक्षण, निवारण और संवर्धन से संबंधित है।

अनुसंधान विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन वर्णनात्मक है जिसमें वेद और पुराणों में उल्लेखित मंत्रों और सूक्तियों का उपयोग पर्यावरण संरक्षण और चेतना के अध्ययन के लिए किया गया है।

शोध के सोपान

पर्यावरण संरक्षण – वेदों में पर्यावरण संरक्षण और चेतना का सतत उल्लेख है। पृथ्वी, वायु, जल, और आकाश की शुद्धि और इन्हें प्रदूषण बचाने का अनेक मंत्रों में निर्देश है। अथर्ववेद में वर्णन है कि पर्यावरण के संघटक तत्व तीन है – जल, वायु, और औषधियाँ। सर्वप्रथम वनस्पतियों के महत्व का प्रकाश डालने का श्रेय वेदों को है। वेदों आदि में पर्यावरण प्रदूषण के कारणों तथा इनसे बचाव का भी निर्देश है।

वायु संरक्षण – वेदों में '' आतो वाता ओधषमः '' कहकर यह निर्देश दिया गया है कि पर्यावरण की रक्षा हेतु शुद्धि पर ध्यान देना अनिवार्य है। अथर्ववेद में वायु और सूर्य को सब प्रकार के रोग नष्ट करने वाला बताया है। वेदों में वायु को 'विश्वभेवत' कहा गया है क्योंकि यह सभी रोगों का नाश करती है। ऋग्वेद के मंत्र में निर्देश है कि वायु में अमृत अर्थात् आक्सीजन है। उसे नष्ट न होने दे।

जल संरक्षण – वेदों में जल की उपयोगिता और महत्व पर बहुत प्रकाश डाला गया है। जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोगनाशक है और आयुवर्धक है। जल को दूषित करना पाप माना गया है। यह मनुष्य को जीवन शक्ति प्रदान करता है। अथर्ववेद के मंत्र में हिमालय से निकलने वाली नदियों के जल को विशेष लाभकारी बताया गया है इसका हृदय रोग में विशेष लाभ है। ऋग्वेद का कथन है कि जल और वनस्पतियों का मनुष्य पर बहुत उपकार है।

वृक्ष वनस्पति संरक्षण

अथर्ववेद में कहा गया है कि वृक्ष वनस्पतियों में सभी देवों की शक्तियों विद्यमान है। वे मनुष्य को जीवन शक्ति देती है और उसकी रक्षक है। मत्स्य पुराण में कहा गया है ''दशपुत्र समो द्रुमः''अर्थात् एक वृक्ष जनहित की दृष्टि से दस पुत्रों के बराबर है। वृक्ष संसार की रक्षा करते है और उसे प्राणवायु (ऑक्सीजन) रूपी दूध पिलाते है।

पर्यावरण प्रदूषण एव निराकरण

ओजोन परत – ऋग्वेद और अथर्ववेद में भूमि के चारों ओर विद्यमान 'यकृतउल्ब'(ओजोन परत) का उल्लेख है। अथर्ववेद में इस ओजोन परत का रंग जिरव्यय अर्थात सुनहरी बताया गया है। मंत्रों से स्पष्ट है कि ओजोन परत पृथ्वी की रक्षा करती है। इसे हानि पहुंचाना संकटदायी है।

यज्ञ–प्रदूषण निवारक – चारों वेदों में यज्ञों का बहुत अधिक महत्व वर्णन किया गया है। यजुर्वेद में यज्ञ से बादल, बादल से वर्षा और वर्षा से उत्तम कृषि का वर्णन है। ऋतुसंधियों पर होने वाले संक्रमण रोगों को दूर करने के लिए भेषज्य यज्ञों का विधान है।

सूर्य–प्रदूषण निवारक – ऋग्वेद और अथर्ववेद का कथन है कि उदय होता हुआ सूर्य दिखाई देने वाले और न दिखाई देने वाले सभी प्रकार के प्रदूषण को नष्ट करता है। तथा सौर ऊर्जा को अमोघ अस्त्र बताया गया है।

ध्वनि–प्रदूषण निवारक – ऋग्वेद का कथन है कि शब्द शक्ति का ही सूक्ष्म रूप विद्युत तरंग है और मन से भी सूक्ष्मतर है। वैदिक विधि के अनुसार वेदमंत्रों आदि का सस्वर मधुर ध्वनि से पाठ, भजन, कीर्तन, संगीत आदि का आयोजन और प्रसार ध्वनि प्रदूषण की समस्या का काफी अंश तक हल कर सकेगा।

पर्वत–प्रदूषण निवारक –पर्वत शुद्ध वायु प्रदान कर नीरोगता के आधार और प्रदूषण के नाशक है। वेदों में स्वास्थ्य लाभ के लिए पर्वतों पर जाने का वर्णन किया गया है। पर्वतों पर देवदार, चीड़ के पेड़ पर्यावरण शोधक है।

अग्नि–प्रदूषण निवारक – वेदों में अग्नि को विच अर्थात संसार को पवित्र करने वाला कहा गया है। अग्नि का गुण 'वाहकता' है वह जहाँ भी अशुद्धि है उनको सदा नष्ट करता है।

निष्कर्ष

वेद पुराणों की विषय साम्रगी के विश्लेषण से सत्यापित होता है कि पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण चिंतन, प्रदूषण निवारण में वेद प्रेरणा स्रोत रहे है। जिससे प्रत्येक प्राणी के लिए सुखदायक जीवन प्राप्त हो सके। ऐसे पर्यावरणीय निर्माण हेतु मानव जब प्रयासरत रहेगा तब सभी प्राकृतिक बाधाओं और व संकटों से मुक्त हो जाएगा। जल की आहुतियाँ प्रदूषण को कम करती है। जल जीवन तुल्य, दिव्य सुख देने वाला, शोधक व श्रेष्ठ मित्र है। वायु के शुद्धिकरण हेतु यज्ञ की आज भी महत्ता है। यह शोधकार्य पर्यावरण संबंधित निर्देशों को ही नहीं प्रस्तुत करता अपितु ऋषियों द्वारा किए गए दूरगामी चिंतन को भी प्रस्तुत करता है।

शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान युग में मानव ने बहुत वैज्ञानिक प्रगति की है लेकिन पर्यावरण के प्रति सचेत होने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय चेतना को प्रोत्साहित करने के लिए वेद और पुराणों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

सुझाव

पर्यावरणीय संरक्षण के प्रति चेतना और राज्य सरकार के प्रयास या विभिन्न महापुरूषों के विचार या विभिन्न धर्मों के विचार आदि पर शोध किए जा सकते है।

उपसंहार

पर्यावरण संरक्षण के प्रति चेतना की अवधारणा प्राचीनतम विचार है जिसे धारण करने में सृष्टि व मानव मात्र का कल्याण निहित है।

संदर्भ

1. *महेन्द्र, रामचरण जी,(1999ई) वेद कथांक, वेदों में पर्यावरण रक्षा, पृष्ठ क्र. 360–61*
2. *सुनील, वनकाम, (2008) पर्यावरण मीमांसा, आगरा, राधा प्रकाशन मंदिर, पृष्ठ क्र. 411–424*
3. *गोयल, एम. के.,(1997) पर्यावरण शिक्षा, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, पृष्ठ क्र. 263–283*
4. *भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., अप्रैल (2009), पृष्ठ क्र. 54,55*
5. *पर्यावरण विकास, राष्ट्रीय मासिक पत्रिका, अक्टूबर (2012), पृष्ठ क्र. 7,8*